International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-10-2020; Accepted: 15-10-2020; Published: 02-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 01-02

शैक्षिक समायोजन, पर निर्देशन एवं परामर्श के प्रभाव का अध्ययन

चन्द्र सिंह [1], हनुमान सहाय शर्मा [2]
[1] पी.एच.डी. अनुसंधानकता, मोहनलाल सुखाडिया वि.वि. उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निदेषक, रीडर, निम्बार्क टी.टी. कालेज, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
इक्कीसवी शताब्दी सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है, इसमें मनुष्य अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यवसायिक समस्याओं एवं जटिलताओं के कारण कुंठित, घुटन, असहज और विचलित रहता है । अतः उसे निर्देशन एवं परामर्श की ''महत्ती'' आवश्यकता महसूस करता है । परामर्श एवं निर्देशन की शक्ति सार्मथ्य का प्रभाव और चमत्कार ही ऐसा है कि मनुष्य की योग्यता, क्षमता, प्रतिभा और हौंसला बढाकर सही दिशा में पथ प्रदर्शन करता है । मनुष्य की बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था में निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है । इसका क्षेत्र व्यापक है जैसे शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, धार्मिक निर्देशन एवं परामर्श आदि है । इस अनुसंधान में विद्यालय निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता पर जोर दिया गया है जिसके अन्तर्गत शिक्षार्थी शैक्षिक स्तर पर नियोजित होकर शैक्षिक परिवेश में समायोजित हो, क्योंकि समायोजन भी एक व्यवहारात्मक आधार है ।

मूल शब्द: इक्कीसवी, समायोजन, अध्ययन, मनुष्य

प्रस्तावना
आधुनिक युग में निर्देशन एवं परामर्श की अपने जीवन में विकास, वृद्धि, योग्यता, क्षमता कौशल का उत्तम प्रदर्शन करने के लिये आवश्यकता महसूस करते है । निर्देशन एवं परामर्श के केन्द्र में मनुष्य होता है । बालक अपने विकास, क्षमता, योग्यता एवं प्रतिभा का विकास करने के लिये निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता महसूस करता है । परामर्श और निर्देशन शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रदान किया जाता है । शिक्षार्थी के संर्वागीण विकास के लिये शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श अति आवश्यक शैक्षिक परिस्थितियों से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु विद्यार्थियों को सक्षम बनाया जाता है । शैक्षिक परिस्थितियों के संमजन की योग्यता के अभाव में शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति कर पाना कठिन है । संमजन की यह योग्यता केवल उसी दशा में उत्पन्न हो सकती है जब विद्यार्थियों को अपने स्तर के अनुरूप आगे बढ़ने का अवसर निरन्तर प्राप्त होता है । पाठ्यक्रम के उपयुक्त चयन विद्यालयी पर्यावरण से समायोजन नवीन शिक्षण तकनीकी के ज्ञान आत्म अनुदेशन की प्रवृति के विकास आदि के क्षेत्र में वांछित एवं समयानुसार सहायता प्रदान करके शैक्षिक उपलब्धि की दिशा में निरन्तर अग्रसर किया जा सकता है । इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु निर्देशन का उपयोग अत्यन्त सहायक है ।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
इक्कीसवी शताब्दी सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है, इसमें मनुष्य अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यवसायिक समस्याओं एवं जटिलताओं के कारण कुंठित, घुटन, असहज और विचलित रहता है । अतः उसे निर्देशन एवं परामर्श की ''महत्ती'' आवश्यकता महसूस करता है । परामर्श एवं निर्देशन की शक्ति सार्मथ्य का प्रभाव और चमत्कार ही ऐसा है कि मनुष्य की योग्यता, क्षमता, प्रतिभा और हौंसला बढाकर सही दिशा में पथ प्रदर्शन करता है । मनुष्य की बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था में निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है । इसका क्षेत्र व्यापक है जैसे शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, धार्मिक निर्देशन एवं परामर्श आदि है । इस अनुसंधान में विद्यालय निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता पर जोर दिया गया है जिसके अन्तर्गत शिक्षार्थी शैक्षिक स्तर पर नियोजित होकर शैक्षिक परिवेश में समायोजित हो, क्योंकि समायोजन भी एक व्यवहारात्मक आधार है । शिक्षार्थी व्यक्तित्व विकास के विभिन्न सोपान को पूर्ण कर व्यक्तित्व निखार सके । संवेगों के विकास के आधार पर शिक्षार्थी में भावात्मक परिवर्तन और परिष्कृत रूप से आगे बढ़े तथा संवेगों को परिस्थितियों के अनुसार ढालने का सुअवसर प्रदान कर सके । अतः इस अनुसंधान में विद्यालय निर्देशन एवं परामर्श के पूर्व एवं बाद में प्रभाव का शैक्षिक समायोजन व्यक्तित्व विकास एवं संवेगों पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया जाना है । विभिन्न आ रही जटिलताओं, विद्रुपताओं पर परिवर्तन के अनुसार विद्यार्थी ढाल सके, शैक्षिक समायोजन, व्यक्तित्व विकास, और संवेगों में सुधार, बदलाव, व्यवस्थित व्यवहार और परिवर्तन के लिये निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है ।

शोध के उद्देश्य
1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर शैक्षिक समायोजन, पर पूर्व–पश्च परीक्षण का निर्माण करना ।
4. प्रायोगिक समूह पर शैक्षिक समायोजन, पर निर्देशन एवं परामर्श के प्रभाव का पता लगाना ।

अध्ययन की परिकल्पना : –
1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के पूर्व–पश्च परीक्षण पर निर्देशन एवं परामर्श का सार्थक अन्तर नहीं है ।

शोध विधि
इस अनुसंधान में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा । जिसके अन्तर्गत पूर्व–पश्च् परीक्षण द्वारा किया गया है ।

न्यादर्श
प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन साउद्देश्य विधि द्वारा चयन किया गया है । अजमेर जिले के केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 के माध्यमिक कक्षा स्तर के 40 विद्यार्थियों का चयन साउद्देश्य विधि से किया किया गया है । इस प्रायोगिक अनुसंधान में 40

विद्यार्थियों पर पूर्व–पश्च् परीक्षण कर शोध कार्य किया गया है।

उपकरण

इस अनुसंधान में दत्त संकलन हेतु निम्नलिखित मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किये जायेंगे ।

1. समायोजन अनुसूची – डॉ. कुलकर्णी एवं केसकर द्वारा निर्मित

सारणी 1: शैक्षिक समायोजन

परीक्षण का नाम	विद्यार्थी समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
समायोजन परीक्षण	पूर्व परीक्षण	40	14ण्78	7.34	2.543
	पश्च्य परीक्षण	40	19.75	9.96	

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 के प्रयोगात्मक समूह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन का पूर्व और पाश्च्य परीक्षण के सांख्यिकीय परिणाम

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रयोगात्मक समूह के मध्यमान क्रमशः 14ण्78एवं 19.75है । जिनमें अन्तर है, इस अन्तर की सार्थकता को देखने के लिये निकाले गये टी–मान अनुपात 2. 543है जो कि सारणी स्वतंत्रता के अंश 40 पर 0.05 विश्वास के स्तर पर निर्धारित मान 1.98 से अधिक है । अतः सांख्यिकी दृष्टि से पूर्व और पश्च परीक्षण के परिणाम के आधार पर निर्देशन एवं परामर्श का शैक्षिक समायोजन पर केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–1 के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव पडता है ।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रयोगात्मक समूह संवेगात्मक विकास के भाग–अ व ब के मध्यमान क्रमशः 125. 55एवं 115.38है । जिनमें अन्तर है, इस अन्तर की सार्थकता को देखने के लिये निकाले गये टी–मान अनुपात 2.258'है । जो कि स्वतंत्रता के अंश 40 पर 0.05 के विश्वास के स्तर पर निर्धारित मान 1.98 से अधिक है । अतः सांख्यिकीय दृष्टि से पूर्व और पश्च परीक्षण के परिणाम के आधार पर निर्देशन एवं परामर्श का संवेगात्मक विकास पर केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–1 के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सार्थक प्रभाव पडता है ।

निष्कर्ष

प्रदत्तों के विश्लेषण व व्याख्या के आधार पर निर्देशन एवं परामर्श का शैक्षिक समायोजन, पर सार्थक प्रभाव पडता है ।

सन्दर्भ सूची

1. बैस, नरेन्द्र दत्ता, संजय, डॉ. चतुर्वेदी शुभ्रा : अधिगम का मनोसामाजिक आधार व शिक्षण, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर 2004–05.
2. भाटिया एवं सफाया : एजुकेशन साइकोलोजी एण्ड गाइडेंस धनपतराय एण्ड संस, जालन्धर, 1987.
3. वेब साईटू .ncert.nic.in, www.aiscap.nic.in, www.rci.nic.in